B.Ed. IInd Year

Subject :- Knowledge Language & Curriculum

Topic :- ज्ञान के स्रोत

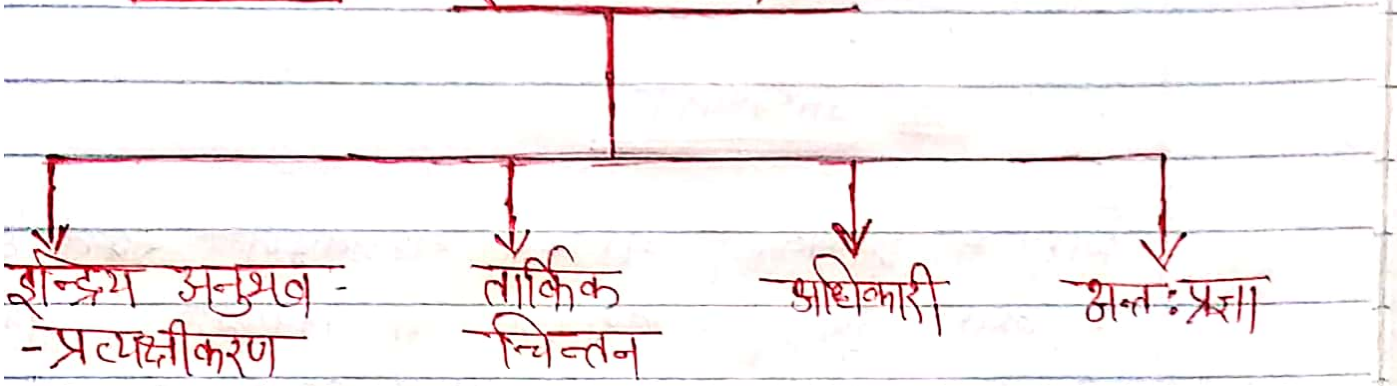

- इन्द्रिय अनुभव - प्रत्यक्षीकरण
- तार्किक चिन्तन
- अधिकारी
- अन्त: प्रज्ञा

1. इन्द्रिय अनुभव - प्रत्यक्षीकरण

इन्द्रिय अनुभव ज्ञान का प्रथम एवं सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोत है। इन्द्रियो द्वारा जो अनुभव या प्रत्यक्षीकरण होता है, वह ज्ञान का एक मुख्य साधन है। इन्द्रियो की सहायता से जो हम ज्ञान प्राप्त करते है उसको इन्द्रिय ज्ञान कहते है। पाँच इन्द्रिया है — आँख, नाक, कान, जीभ, और त्वचा। व्यक्ति इनके माध्यम से ही ज्ञान प्राप्त करता है। ऐसे ज्ञान को प्रत्यक्ष ज्ञान कहा जाता है। यह स्रोत प्राथमिक तथा वास्तविक है। इस ज्ञान मे बोध सम्मिलित होता है।

2. तार्किक चिन्तन

तार्किक चिन्तन ज्ञान का दूसरा स्रोत है। कुछ व्यक्ति, जैसे – वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, मनोवैज्ञानिक, आदि

P.T.O.

Scanned with CamScanner

अपने-2 क्षे० मे निपुण है तार्किक चिन्तन मनुष्य के अन्दर ऐसी योग्यता है, जिसके अभाव मे कोई भी ज्ञान सम्भव नही है।

3 अधिकारी

शिक्षा मे अधिकारी भी एक महत्वपूर्ण स्रोत है। कुछ व्यक्ति जैसे- गणितशास्त्री, समाजशास्त्री, इंजीनियर आदि अपने-2 क्षे० मे पारंगत हासिल किये हुए होते है। और उनके अपने नियम व सिद्धान्त होते है। उनके नियम कुछ समय पश्चात् विश्वव्यापी बन जाते है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षा मे विद्यार्थियो को निर्देश देने मे शिक्षक अधिकारी होता है, परन्तु उच्च कक्षा मे विद्यार्थी उसके अनुदेशन को मानने के लिए विचार-विमर्श करते है। क्योकि इस स्तर पर बालको की तर्कशक्ति का विकास हो जाता है।

4 अन्तः प्रज्ञा

ज्ञान का एक अन्य महत्वपूर्ण स्रोत है- अन्तः प्रज्ञा। अन्तः प्रज्ञा के अन्तर्गत ज्ञानेन्द्रियो एवं तर्कचिन्तन की कोई भूमिका नही होती, इसके अन्तर्गत अचानक एक प्रकाश की ज्योति सी मालूम पडती है, जिससे व्यक्ति को बहुत कुछ ज्ञात होता है। इस प्रकार को ज्ञान की संज्ञा कहते है।

Scanned with CamScanner